International Journal of Academic Research
P-ISSN: 2348-7666: Impact Factor: 7.215
Homepage: https://www.ijar.org.in/
Volume-13, Issue-2(2), Apr-Jun-2026
This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License [CC BY 4.0]

आधुनिक मीडिया और हिन्दी साहित्य की वर्तमान दशा

डॉ. वेडंगि सरोजिनी
सहायक आचार्य(टी.ए), हिंदी विभाग, आंध्र विश्वविद्यालय, विशाखपट्टणम्, आंध्रप्रदेश।

वर्तमान समय मीडिया के बदलते हुए स्वरूप 'नव मीडिया' का दौर है। यह मीडिया का आधुनिक रूप है, जिसमें सोशल मीडिया के विविध नव मंच और माध्यम शामिल हैं। इन्हीं सोशल मीडिया आधारित साधनों को सामूहिक रूप से 'नव मीडिया' कहा जाता है। समय के साथ हुए तकनीकी विकास ने सूचना के क्षेत्र में एक नई क्रांति ला दी है। अब मीडिया केवल अखबारों और पत्रिकाओं तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इसमें इलेक्ट्रॉनिक और डिजिटल माध्यम भी शामिल हो गए हैं। इन माध्यमों के जरिए कोई भी व्यक्ति बिना किसी शुल्क या दबाव के सूचनाओं का आदान-प्रदान कर सकता है और अपनी सक्रिय भागीदारी भी दर्ज कर सकता है। इस कारण सूचना का प्रवाह पहले की अपेक्षा अधिक तेज और व्यापक हो गया है। सोशल मीडिया ने मीडिया को और अधिक लोकतांत्रिक बना दिया है, जहां हर व्यक्ति अपनी इच्छानुसार स्वयं को अभिव्यक्त कर सकता है। आज के समय में अभिव्यक्ति का सबसे लोकप्रिय और खुला मंच 'नव मीडिया' ही है। इसका उपयोगकर्ता कभी भी, कहीं भी और किसी भी रूप में अपने विचार साझा कर सकता है। साथ ही, यह संवाद और विचार-विनिमय का सशक्त माध्यम बन चुका है।

'नव मीडिया' के अनेक प्लेटफॉर्म ऐसे हैं, जहां व्यक्ति सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक विषयों पर अपने विचार व्यक्त करता है। किसी भी सामाजिक मुद्दे पर पलभर में प्रतिक्रियाओं की बाढ़ आ जाती है और लोग अपनी-अपनी दृष्टि से उस पर टिप्पणी करने लगते हैं। इससे जनमत निर्माण की प्रक्रिया भी अधिक सक्रिय और तीव्र हो गई है। जब कोई घटना समाज के बड़े वर्ग को प्रभावित करती है, तो लोग कविता, कहानी, उपन्यास, आलोचना आदि साहित्यिक विधाओं के माध्यम से अपनी भावनाएं व्यक्त करते हैं। आज सोशल मीडिया पर साहित्य लेखन की प्रवृत्ति तेजी से बढ़ी है। नए और युवा रचनाकारों को अपनी प्रतिभा दिखाने के लिए एक सुलभ मंच मिल गया है। इस दृष्टि से कहा जा सकता है कि 'नव मीडिया' ने साहित्य के लेखन, पाठन और प्रकाशन को सरल बना दिया है। इसके माध्यम से रचनाएं तुरंत व्यापक पाठक वर्ग तक पहुंच जाती हैं। हालांकि, इसके प्रभाव से साहित्य की भाषा, शैली और संवेदनाओं में भी परिवर्तन देखने को मिला है- जिसे कुछ लोग सकारात्मक मानते हैं, तो कुछ इसे हानि के रूप में देखते हैं। इसके अतिरिक्त, नव मीडिया ने पारंपरिक प्रकाशन प्रणाली को भी चुनौती दी है और साहित्य को अधिक जनोन्मुखी बनाया है। अब लेखक और पाठक के बीच की दूरी कम हो गई है, जिससे साहित्यिक संवाद और भी सजीव हो उठा है। कुल मिलाकर, 'नव मीडिया' ने हिंदी साहित्य को एक नया और व्यापक स्वरूप प्रदान किया है। 'नव मीडिया' में अखबार, आलेख और ब्लॉग्स से लेकर संगीत, वीडियो और पॉडकास्ट जैसे अनेक डिजिटल माध्यम शामिल हैं। यह जनसंचार का ऐसा व्यापक मंच है, जिसमें वेबसाइट, ईमेल, मोबाइल ऐप और विभिन्न इंटरनेट-आधारित साधनों के जरिए सूचनाओं का आदान-प्रदान किया जाता है। वस्तुतः 'नव मीडिया' वेब पत्रकारिता का ही विस्तृत रूप है, जिसमें सोशल मीडिया का विशेष महत्व और वर्चस्व स्थापित हो चुका है। सोशल मीडिया का मूल आधार इंटरनेट है, जिसने पत्रकारिता को नया स्वरूप प्रदान करने के साथ-साथ अनेक नए माध्यमों को जन्म दिया है। वर्तमान सदी विज्ञान, तकनीक और इंटरनेट की सदी है। कंप्यूटर, लैपटॉप, मोबाइल और टैबलेट जैसी अनेक तकनीकों ने मानव जीवन को सरल और सुगम बना दिया है। आज लगभग सभी तकनीकें किसी न किसी रूप में इंटरनेट से जुड़ी हुई हैं। पिछले दो दशकों में इंटरनेट ने हमारी जीवनशैली को पूरी तरह बदल दिया है और एक नए आभासी समाज का निर्माण किया है। हमारी आवश्यकताएं, कार्य-प्रणालियां, रुचियां और सामाजिक संबंधों की संरचना तक इंटरनेट और कंप्यूटर से प्रभावित हो रही हैं।

आज भारत सहित पूरे विश्व में तकनीकी विस्तार तेजी से हुआ है। लगभग प्रत्येक व्यक्ति के हाथ में मोबाइल फोन पहुंच चुका है, जो अब केवल संचार का साधन न रहकर जीवन का अनिवार्य अंग बन गया है। मोबाइल और इंटरनेट ने सूचना एवं संचार के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन लाए हैं। इक्कीसवीं सदी के प्रारंभ से ही ऐसा कोई क्षेत्र नहीं बचा है, जहां सूचना-संचार प्रौद्योगिकी का प्रभाव न पड़ा हो। आज का शिक्षित वर्ग 'स्मार्टफोन' के माध्यम से निरंतर सूचना प्रौद्योगिकी से जुड़ा हुआ है। वर्तमान समाज में मोबाइल फोन केवल बातचीत तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह मोबाइल वॉलेट, बैंकिंग, ऑनलाइन शॉपिंग, डिजिटल पुस्तकालय और मोबाइल पत्रकारिता (मोबाइल जर्नलिज्म) जैसे अनेक रूपों में उपयोग किया जा रहा है। आज किताबें, अखबार, टीवी, रेडियो और यहां तक कि बैंकिंग सेवाएं भी एक ही मोबाइल में सुलभ हो गई हैं। इससे 'कैशलेस' अर्थव्यवस्था और डिजिटल समाज की अवधारणा को भी बल मिला है। सोशल मीडिया के विभिन्न मंच-जैसे फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम, लिंक्डइन, मैसेंजर और यूट्यूब-आज युवाओं के लिए सशक्त अभिव्यक्ति के माध्यम बन चुके हैं। ये मंच उन्हें अपने

विचार खुलकर रखने, संवाद स्थापित करने और वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बनाने का अवसर प्रदान करते हैं। साथ ही, सोशल मीडिया ने सूचना के त्वरित प्रसार को संभव बनाया है, जिससे जनमत निर्माण की प्रक्रिया अधिक सक्रिय और प्रभावशाली हो गई है। इसके अतिरिक्त, नव मीडिया ने संवाद की पारंपरिक सीमाओं को तोड़ते हुए वैश्विक स्तर पर लोगों को एक-दूसरे से जोड़ दिया है। अब सूचना का प्रवाह केवल एकतरफा न रहकर बहुआयामी और सहभागी हो गया है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति एक साथ पाठक, लेखक और प्रसारक की भूमिका निभा सकता है। यही कारण है कि 'नव मीडिया' आज के युग में जनसंचार का सबसे प्रभावी, सुलभ और व्यापक माध्यम बनकर उभरा है।

आज हर वह व्यक्ति, जिसमें लेखन की रुचि और अभिव्यक्ति की क्षमता है, लेखक बन सकता है। सोशल मीडिया इस अभिव्यक्ति को दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यह केवल लिखने की स्वतंत्रता ही नहीं देता, बल्कि व्यक्ति को संपूर्ण अभिव्यक्ति का मंच प्रदान करता है। आज सोशल मीडिया अभिव्यक्ति का अत्यंत सशक्त माध्यम बन चुका है, जहाँ हर पाठक लेखक है और हर लेखक पाठक भी। यहाँ मुख्यधारा के मीडिया की तरह एकतरफा संचार नहीं होता, बल्कि प्रत्येक विचार पर तुरंत प्रतिक्रिया मिलती है। सोशल मीडिया वास्तव में संवादात्मक संचार का माध्यम है, जिसमें उपयोगकर्ता न केवल अपने विचार साझा करता है, बल्कि दूसरों की प्रतिक्रियाओं से भी जुड़ता है। फोटो, वीडियो, इमोजी और अन्य संकेतों के माध्यम से अभिव्यक्ति और भी प्रभावी हो गई है। सोशल मीडिया ने आम व्यक्ति को पत्रकार, लेखक, आलोचक और कवि बनने का अवसर दिया है। यह आज मानव जीवन का अभिन्न अंग बन चुका है। विद्यार्थी, शिक्षक, लेखक और साहित्यकार- सभी इसके माध्यम से जुड़े हुए हैं और यह उनकी आवश्यकता का हिस्सा बन गया है। पत्रकारिता को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ और साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। वर्तमान समय में सोशल मीडिया इन दोनों को विस्तार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। तकनीकी विकास ने जिस तेजी से मीडिया को बदला है, उसी गति से हिंदी साहित्य के आंतरिक और बाह्य स्वरूप को भी प्रभावित किया है। 'नव मीडिया' के माध्यम से समकालीन हिंदी साहित्य की पहुँच विश्वभर में फैल चुकी है। जहाँ-जहाँ इंटरनेट उपलब्ध है, वहाँ हिंदी साहित्य का सृजन और पठन-पाठन संभव हो गया है। आज इंटरनेट के विभिन्न मंचों- जैसे वेब पोर्टल, वेबसाइट्स और ऑनलाइन पत्रिकाएँ- पर हिंदी साहित्य का व्यापक सृजन हो रहा है। विभिन्न देशों से हिंदी साहित्यिक पत्रिकाओं का प्रकाशन भी किया जा रहा है।

साहित्य अब केवल पारंपरिक मुद्रित रूप तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उसने डिजिटल और वर्चुअल स्वरूप भी ग्रहण कर लिया है। साहित्य प्रेमी फेसबुक, यूट्यूब, ब्लॉग्स, वेबसाइट्स और अन्य 'नव मीडिया' मंचों के माध्यम से साहित्य से जुड़ रहे हैं। इन मंचों की बढ़ती संख्या और उनसे जुड़े लोगों की भागीदारी यह दर्शाती है कि साहित्य की पहुँच कितनी व्यापक हो चुकी है। वर्तमान समय में सोशल मीडिया ने साहित्य के लेखन, पठन और प्रकाशन- तीनों को विस्तार दिया है। अब साहित्य केवल पढ़ा ही नहीं जाता, बल्कि उसे ऑडियो और वीडियो रूप में भी प्रस्तुत किया जा रहा है, जिससे वह अधिक लोगों तक पहुँच रहा है। हालाँकि, विज्ञान और तकनीक के इस युग में व्यावसायिक और तकनीकी शिक्षा को अधिक महत्व दिए जाने के कारण साहित्य का स्थान कुछ हद तक सीमित होता दिखाई देता है। इसके बावजूद, 'नव मीडिया' ने साहित्य को नई ऊर्जा, नया मंच और नया पाठक वर्ग प्रदान किया है। 'नव मीडिया' ने न केवल मीडिया और पत्रकारिता के स्वरूप को बदला है, बल्कि हिंदी साहित्य को भी एक नई दिशा और व्यापक पहचान दी है। यह परिवर्तन साहित्य और समाज दोनों के लिए नई संभावनाओं के द्वार खोल रहा है। 'नव मीडिया' जहाँ एक ओर अभिव्यक्ति और संवाद का सशक्त माध्यम बना है, वहीं दूसरी ओर यह अनैतिकता और अराजकता के प्रसार का कारण भी बनता जा रहा है। विशेषकर युवा वर्ग का एक बड़ा हिस्सा साहित्य से दूर होता दिखाई दे रहा है और वह सोशल मीडिया के विभिन्न मंचों में अधिक उलझा रहता है। आज जनसंचार के अनेक साधन- जैसे टेलीविजन, सिनेमा और ओटीटी प्लेटफॉर्म- मनोरंजन के लिए सहज उपलब्ध हैं, जो मोबाइल के एक क्लिक पर ही सुलभ हो जाते हैं। ऐसे में जब युवा अपने समय का बड़ा भाग इन माध्यमों को दे रहा है, तो स्वाभाविक है कि साहित्य पढ़ने के लिए उसके पास समय कम रह जाता है। युवा वर्ग आज इंटरनेट के माध्यम से विभिन्न प्रकार की जानकारियाँ प्राप्त करने में सक्षम है, किंतु साहित्यिक पत्रिकाओं और रचनात्मक लेखन के प्रति उसकी रुचि अपेक्षाकृत कम होती जा रही है। इसका एक प्रमुख कारण साहित्य के प्रति उपेक्षा का भाव भी है। वर्तमान में तकनीकी और व्यावसायिक विषयों की ओर बढ़ते आकर्षण ने मानविकी विषयों, विशेषकर साहित्य, को कहीं न कहीं हाशिये पर डाल दिया है। सूचना प्रौद्योगिकी के इस नए युग से पूर्व साहित्य मुख्यतः पुस्तकों और पत्र-पत्रिकाओं तक सीमित था, परंतु आज 'नव मीडिया' के माध्यम से साहित्य का स्वरूप अत्यंत व्यापक हो गया है। जो साहित्य कभी केवल मुद्रित रूप में उपलब्ध था, अब वह डिजिटल मंचों पर भी सुलभ है। पहले 'नव मीडिया' पर लिखे गए साहित्य को गंभीरता से नहीं लिया जाता था, लेकिन आज यह साहित्य का अभिन्न हिस्सा बन चुका है।

अब साहित्य केवल पुस्तकों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इंटरनेट के विभिन्न माध्यमों- जैसे फेसबुक, व्हाट्सएप, ब्लॉग, वेबपेज और यूट्यूब- पर नए रूप में विकसित हो रहा है। समय के साथ तकनीक ने मानव जीवन को समृद्ध किया है और समाज ने भी इन परिवर्तनों के साथ स्वयं को ढाल लिया है। आज सोशल मीडिया का उपयोग करने वाला व्यक्ति साहित्य के प्रसार में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। हालाँकि,

यह भी सत्य है कि सोशल मीडिया तक पहुँच उन्हीं लोगों की है, जिनके पास स्मार्टफोन, कंप्यूटर या इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध है। इस प्रकार 'नव मीडिया' ने साहित्य को एक नया पाठक वर्ग और लेखक वर्ग प्रदान किया है। विभिन्न साहित्यिक विधाएँ- जैसे कविता, कहानी, उपन्यास, संस्मरण, यात्रा-वृत्तांत और समीक्षा- आज सोशल मीडिया के माध्यम से नए आयाम प्राप्त कर रही हैं। आज के दौर में सूचना का प्रवाह इतना तीव्र हो गया है कि जो व्यक्ति इंटरनेट से जुड़ा है, वह इस प्रवाह का हिस्सा बन सकता है। जिस प्रकार आधुनिक मीडिया ने समाचारों की परिभाषा बदली है, उसी प्रकार 'नव मीडिया' ने साहित्य के स्वरूप और लेखन शैली में भी परिवर्तन किया है। सोशल मीडिया के विभिन्न उपकरणों में 'ब्लॉग' एक अत्यंत महत्वपूर्ण माध्यम बनकर उभरा है। ब्लॉग को एक ऐसी डिजिटल पुस्तक के रूप में देखा जा सकता है, जिसे निरंतर अद्यतन किया जा सकता है। इसमें न तो शब्द-सीमा का बंधन होता है और न ही प्रकाशन का खर्च। कोई भी व्यक्ति अपनी इच्छा के अनुसार लेखन कर सकता है। विशेष रूप से नवोदित लेखकों के लिए ब्लॉग एक वरदान सिद्ध हुआ है, क्योंकि यह उन्हें बिना किसी बाधा के अपनी रचनात्मकता प्रस्तुत करने का अवसर देता है। ब्लॉग लेखन ने मौलिक सृजन को प्रोत्साहित किया है और साथ ही आलोचना तथा विमर्श के लिए भी एक सशक्त मंच उपलब्ध कराया है।

'नव मीडिया' ने अनेक नए विमर्शों को जन्म दिया है और विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक तथा साहित्यिक मुद्दों को मुखर बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आज लघु कविताएँ, कहानियाँ, उपन्यास, संस्मरण और समीक्षाएँ सोशल मीडिया पर व्यापक रूप से लिखी और पढ़ी जा रही हैं। वर्तमान में अनेक साहित्यिक ब्लॉग और मंच सक्रिय हैं, जो हिंदी साहित्य को नई दिशा देने का कार्य कर रहे हैं। ब्लॉग लेखन आज साहित्य जगत में एक महत्वपूर्ण प्रवृत्ति बन चुका है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि 'नव मीडिया' ने साहित्य को एक नया आयाम प्रदान किया है- जहाँ एक ओर यह उसके विस्तार का माध्यम है, वहीं दूसरी ओर इसके प्रभावों को समझते हुए संतुलित उपयोग की भी आवश्यकता है। साहित्य की भाषा में परिवर्तन की प्रक्रिया सामान्यतः धीमी और क्रमिक होती है, किंतु इक्कीस वीं सदी में बाज़ारवाद और तकनीकी विकास ने इस गति को तेज कर दिया है। जिस तेजी से संस्कृति परिवर्तित हो रही है, उसी अनुपात में भाषा भी बदलती दिखाई दे रही है। सोशल मीडिया ने इस परिवर्तन को और अधिक तीव्र बना दिया है। आज यह केवल एक माध्यम नहीं, बल्कि कई लोगों के लिए एक आदत या लत बन चुका है, जिससे मुक्त होना आसान नहीं होता। सोशल मीडिया के बढ़ते प्रभाव ने साहित्य के क्षेत्र को भी प्रभावित किया है। आज अनेक साहित्य-प्रेमी विभिन्न डिजिटल मंचों पर अपनी रचनात्मकता को उत्साहपूर्वक प्रस्तुत कर रहे हैं। परंतु इसके साथ ही एक प्रवृत्ति यह भी विकसित हुई है कि साधारण लेखन को भी साहित्यिक दर्जा दिया जाने लगा है। कई बार बिना गहराई और गंभीरता के लिखी गई सामग्री भी व्यापक रूप से प्रसारित हो जाती है, जिससे साहित्य की गुणवत्ता पर प्रश्नचिह्न खड़े होते हैं। आज सोशल मीडिया का उपयोगकर्ता स्वयं को लेखक, कवि या आलोचक के रूप में प्रस्तुत करने लगा है। वह अपनी रचनाओं के माध्यम से लोकप्रियता प्राप्त करना चाहता है, जिसके लिए 'लाइक' और 'कमेंट' एक मापदंड बन गए हैं। इस प्रवृत्ति के कारण लेखन में गहराई और धैर्य की कमी देखने को मिलती है। 'नव मीडिया' के दौर में लेखन में क्षणिकता और तात्कालिकता का प्रभाव अधिक स्पष्ट है।

'नव मीडिया' ने साहित्य और समाज दोनों को नई दिशा दी है। यह एक ओर अभिव्यक्ति का सशक्त मंच है, तो दूसरी ओर इसके विवेकपूर्ण और संतुलित उपयोग की आवश्यकता भी उतनी ही महत्वपूर्ण है, ताकि साहित्य की गरिमा और गुणवत्ता बनी रह सके।

सहायक ग्रन्थ :

1. डॉ. शिवम् चतुर्वेदी - आधुनिक मीडिया और भाषा
2. डॉ. कुमार कौस्तुभ - मीडिया का मायालोक
3. सचिन मिश्रा - हिंदी साहित्य और मीडिया